चाहिए –

1. ग्वाला अस्वस्थ व गंदा न हो, अन्यथा रोगाणुओं के फैलने का भय बना रहता है।
2. उसके वस्त्र स्वच्छ हों, लेकिन ढीले न हों।
3. हाथों के नाखून कटे हों तथा पशु को दुहने से पहले व बाद में अच्छी तरह से हाथ साफ कर लेना आवश्यक है।
4. दूध दोहन के समय खाँसे और थूकें नहीं एवं सिर व मुँह को किसी साफ कपड़े से ढकें।
5. नियमित रूप से पशु के स्वास्थ्य की जाँच करवायें।
6. दूध यथाशीघ्र व अच्छी तरह चतुराई पूर्वक दुहें। थनों को (छीमियों) खींचने की अपेक्षा हल्के से दबाएं। सम्पूर्ण हथेली विधि से दोहन पशु के अयन और थनों (छीमियों) के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है।

8. दूध का स्त्रवण (पशु द्वारा थनों में दूध उतारना)

दूध के दोहन से पूर्व की प्रक्रियायें जैसे पशु का स्नान, पशुशाला की सफाई, थनों (छीमियों) को धोना और उन्हें सहलाना, पशु को दाना देना, दुग्ध बर्तन की आवाज करना, बाछा – बाछी को थन से दूध पिलाना इत्यादि ऐसी क्रियाएँ हैं जो पशु के शरीर में आक्सीटोसिन नामक हारमोन के निकालने की प्रक्रिया को प्रेरित करती है। इसके फलस्वरूप पशु अपने थनों (छीमियों) में दूध उतारता है तथा दुहने के लिए तैयार माना जाता है। दूध को 3 – 5 मिनट के अन्दर निकालना चाहिए लेकिन इस क्रिया में अतिशीघ्रता करने व आक्सीटोसिन का इंजेक्शन लगाने से दूध का रासायनिक संगठन बिगड़ने का भय रहता है।

बच्चे को दुधारू गाय – भैंस के दोहन से पहले दूध पिलाना चाहिए न कि दूध निकालने के बाद। क्योंकि ऐसा करने से पशु द्वारा बच्चे के लिए अयन में दूध बचाए रखने की आदत पड़ जाती है। ऐसे बचे हुए दूध में वसा की मात्रा अधिक होती है जो अयन की कई बीमारियों को जन्म दे सकती है। इसके अलावा बाछा – बाछी द्वारा थनों (छीमियों) को काटने की भी प्रबल संभावना बनी रहती है।

आलेख

डा. शिवानी कटोच डा. दिवेश ठाकुर एवं डा. आलोक शर्मा

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय

चौ. स. कु. हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय

प्रसार पत्रक क्रमांक – 1

स्वच्छ दूध उत्पादन क्यों ?

सौजन्य से

National Agricultural Innovation Project on Biodiversity

जैव विविधता

राष्ट्रीय कृषि नवाचार परियोजना

पशु चिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा विभाग

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय

हि. प्र. कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर 176 062

1. **स्वच्छ दूध क्या है?**

स्वच्छ दूध का अर्थ बाहरी पदार्थों जैसे धूल, मिट्टी, गोबर, बाल, मक्खी आदि के होने से ही नहीं बल्कि बीमारी फैलने वाले कीटाणु एवं जीवाणुओं की उपस्थिति से भी होता है। स्वच्छ दूध उत्पादन के लिए बहुत सी बातें जैसे स्वच्छ वातावरण एवं स्वच्छ पशुशाला, साफ बर्तन, स्वच्छ पशु, दूध दुहने का सही तरीका एवं ग्वाले का स्वच्छ होना आवश्यक है।

2. **वातावरण एवं दुग्धशाला कैसी हो?**

1) पशुशाला बनाते समय इस बात का ध्यान रखें कि उसमें हवा एवं प्रकाश का समुचित प्रबन्ध हो ताकि पशु उसमें स्वस्थ एवं आराम पूर्वक रहें और पशुओं को सर्दी, गर्मी व वर्षा में भीगने से बचाने के लिए पर्याप्त व्यवस्था हो।

2) गायों एवं भैंसों को सुबह एवं सायंकाल दुहने के पश्चात् पशुशाला को रगड़कर 2 प्रतिशत फिनाइलयुक्त पानी से बार-बार धोना चाहिए ताकि प्रत्येक बार दुहने के पूर्व पशुशाला स्वच्छ, सूखी एवं कीटाणु रहित हो सके।

3) छत एवं दीवारों की भी समय-समय पर सफाई एवं पुताई करते रहना चाहिए ताकि उसमें मकड़ी जाला, धूल आदि घर न कर सकें।

4) दूध दुहते समय पशुओं को धूलयुक्त चारा नहीं देना चाहिए।

3. **दुहान का बर्तन कैसा हो?**

1) दूध दुहने का बर्तन स्टेनलेस स्टील का होना अच्छा होता है। पीतल और तांबे का बर्तन बिल्कुल इस्तेमाल न करें। खुली बाल्टी के स्थान पर गुम्बदाकार छत वाली बाल्टी में दूध दुहना चाहिए, क्योंकि इसमें बाहरी गन्दगी तथा पशु के शरीर के बाल नहीं गिरते।

2) दूध दुहने के लिए साफ बर्तन का उपयोग करना चाहिए। गन्दा बर्तन बीमारी फैलाने वाले कीटाणुओं का मुख्य स्त्रोत होता है।

3) दूध दुहने के पश्चात् बर्तन को साबुन/सोडा व गर्म पानी से धोना चाहिए। अगर बर्तन राख से साफ करना हो तो उस को दो-तीन बार पानी से अच्छी तरह खंगाल लेना चाहिए। इसके लिए सदैव साफ पानी का इस्तेमाल करें।

4) बर्तन को धोकर सूखाना अति आवश्यक है। साफ बर्तन को पलट कर रखना चाहिए। बर्तन को तो तेज धूप में कम से कम तीन घण्टे अवश्य रखें ताकि उसमें कीटाणु ना रह सकें।

4. **दूध दुहने से पहले क्या करें?**

1) दूध दुहने से पूर्व पशु का पिछला हिस्सा अच्छी तरह रगड़कर धो लें।

2) दूध दुहते समय पशु की पूँछ पैर से बाँध दे जिससे पूँछ हिलाने से धूल, मिट्टी या गन्दगी दूध में न गिर पाये।

3) दुहने के पूर्व थनों को जीवाणुनाशक (एक बाल्टी पानी में एक चुटकी पोटेशियम परमैंगनेट) घोल में स्वच्छ कपड़ा डुबोकर पोंछ दें।

4) पशु के थनों (छीमियों) का दैनिक निरीक्षण करें। यदि उसमें कोई दरार हो तो उसको साफ करके एन्टिसेप्टिक क्रीम लगा दें। यदि थनों (छीमियों) में सूजन हो या मवाद अथवा खून दूध के साथ आ रहा हो तो वह थनैला रोग का सूचक हैं। अत: तुरन्त पशु-चिकित्सक को दिखायें एवं उसका उपचार करायें।

5. **स्वच्छ दूध दोहन कैसे करें?**

दूध दोहने से पहले ग्वाले को अपने हाथों को साबुन से धोकर सुखा लेना चाहिए।

हाथ के नाखून समय-समय पर काटते रहें।

स्वच्छ व कसे कपड़े पहनें तथा सिर को टोपी द्वारा ढककर रखें ताकि कोई बाल आदि दूध में न गिर पाये।

दूध को 'पूर्णहस्त विधि' द्वारा दुहना चाहिए। दूध की पहली एक-दो धार को स्ट्रिप-प्याले में निकालने से जीवाणु भी थन (छीमी) से निकल जाते है।

दूध दुहने वाला व्यक्ति पूर्ण रूप से स्वस्थ होना चाहिए। यदि ग्वाला कालरा, टायफाइड या टी. बी. आद से ग्रसित है तो बीमारी दूध द्वारा स्वस्थ व्यक्ति में भी फैल सकती है।

6. **दूध संरक्षण कैसे करें?**

1. एल्यूमिनियम या स्टेनलेस स्टील की ढक्कन वाली कैन दूध रखने एवं परिवहन के लिए अच्छी है।
2. दूध का बर्तन यदि ढक्कनयुक्त नहीं है तो उस पर साफ कपड़ा बाँध दें ताकि दूध में धूल, मक्खी आदि न गिर पाये।
3. दूध को सीधी धूप में न रखें क्योंकि इससे दूध के खट्टा होने से उसका स्वाद खराब होने की पूरी संभावना रहती है।
4. दूध को ठंडा रखने के लिए बर्तन को ठण्डे पानी में रखें।
5. ताजे दूध को पहले से रखे बासी दूध में न मिलायें।
6. दूध दुहने के बाद दूध को ढककर दुग्ध संग्रह केन्द्र पर ले जायें।

7. **ग्वाला और उसका स्वास्थ्य**

अस्वस्थ और अस्वच्छ ग्वाला, पशु तथा दूध दोनों के लिए संक्रमण का कारण बन सकता है। इसलिए दुग्ध उत्पादकों को निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान देना